

इस कोलाहल का हल तो निकालो...

दो आदमी विवाद कर रहे हैं। दोनों में से एक भी समझौता करने को तैयार नहीं है। चर्चा का विषय यह है कि मानव कमजोर हो गया है या मानवता? दोनों भिन्न-भिन्न दलीलें-तर्क वितर्क की शुरुआत करते हैं। एक का मत है कि व्यक्ति कमजोर हो गया है और दूसरे का मत है कि मानवता कमजोर पड़ गई है।

दोनों में से कोई हार स्वीकार करने को तैयार नहीं। इतने में वहाँ से एक संत जा रहे थे। उनके चेहरे पर तेज था, चाल में गंभीरता और आँखों में करुणा। ये देख उन दोनों को लगा कि संत को गुरु मानकर उनका निर्णय अंतिम माना जाये।

दोनों ने संत को अभिवादन कर कहा: 'कृपा करके आप हमारे विवाद का निर्णय कीजिए। मानव कमजोर हो गया है या मानवता कमजोर हो गई है? हमारे पास तर्क-वितर्क के लिए अनेकानेक शब्दकोश हैं, इसी कारण हम दोनों हार स्वीकार करने को तैयार नहीं।'।

संत ने कहा: 'आइए, हम एक वृक्ष की शीतल छाया में बैठकर आपके विवाद का निराकरण सोचें।' आपको महान्ता लाओत्से का एक प्रसंग सुनाता हूँ - चीन के एक महान विचारक लाओत्से के पास शहर के एक चैम्पियन कुस्तीबाज ने आकर कहा: आपने बहुतों को जीता है लेकिन क्या मुझे जीत सकते हो?

'कुस्ती लड़ना है तो आ जाइए मैदान में।' इसका कारण था कि लाओत्से सदा मजाक में या गंभीरता से कहते: 'मुझे कोई हरा नहीं सकता।' यह बात सुनकर शहर के कुस्तीबाज का अहम जाग उठा। जिस कारण उसने लाओत्से को कुस्ती लड़ने के लिए चुनौती दी जिसे लाओत्से ने स्वीकार किया।

कुस्ती का दिन निश्चित हुआ। स्थान और समय निश्चित किया गया। सैंकड़ों लोग यह कुस्ती देखने के लिए पहुँचे। एक महान विचारक और स्नायुबद्ध कुस्तीबाज के बीच की यह लड़ाई थी। लाओत्से ने कुस्तीबाज को प्रणाम कर कहा: 'मेरे जैसे के साथ कुस्ती लड़ना स्वीकार किया उसके बदले मैं आपको आभारी हूँ।' ऐसे बोलकर वे कुस्ती के मैदान में चित होकर लेट गये और कहा: आइए, उस्ताद मेरी छाती पर आकर बैठिए और फिर घोषणा कीजिए कि मैं जीत गया हूँ।

'अरे ये क्या बकवास कर रहे हो? ऐसा कभी होता है क्या? इसे कोई कुस्ती नहीं कहा जाता। उठो और लड़ो।'

लाओत्से ने कहा: 'ना भाई, मैं तो कभी का हार चुका हूँ। जो व्यक्ति कब का हार चुका है वह दूसरों को कैसे हरा सकता है?

कुस्तीबाज ने कहा: 'मैं आपके जैसे नकली कुस्तीबाज के साथ लड़ना नहीं चाहता।'। ऐसा कहकर कुस्तीबाज चलने लगा। 'लेकिन एकाएक उसके मस्तिष्क में प्रकाश हुआ और उसने लाओत्से को प्रणाम किया' ओहो! महाशय, आपने अपने इच्छाओं को भी जीत लिया है इसलिए आपको कोई हरा नहीं सकता। मुझे थोड़ी देर बाद समझ में आया कि जिसने इच्छाओं को जीत लिया है वो जगत को जीत सकता है। इसलिए भाइयों! मूल बात विवाद को नहीं है, लेकिन तुम्हारे बीच में 'जिद्द' की है। आप दोनों को एक-दूसरे को हराने में दिलचस्पी है। विवाद ज्ञानवृद्धि के लिए होना चाहिए, वाद-विवाद के लिए नहीं। अपने अहम के संतोष के लिए कोई झुकने को तैयार नहीं है। चर्चा या विवाद तो सत्य संसोधन के लिए होता है, व्यर्थ मुट्ठा टूटकर दलीलबाजी में उतरने के लिए नहीं। बात सीधी है कि मनुष्य है तो मानवता है। मानव कमजोर बने तो मानवता कमजोर बनने लगती है। मानवता आखिर में तो मानव के सद्विचार से जन्म लेती है ना! इसलिए इस विश्व में मानव श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। आपको तरह ही एक रंगिस्तान (रंग) में से पास होते यात्रियों में से दो अलग-अलग विचारों वाले समूह तैयार हो गये। घटना ऐसी थी कि एक बालक बीमार था। उसका गला सूखता जा रहा था। कहीं से पानी मिल जाये तो बालक के प्राण बच जायें। सबको लगा कि ये चमत्कार हो गया। यह पानी का लोटा महान है। दूसरी तरफ के लोगों ने कहा, लोटा नहीं पानी महान है। बिना पानी के लोटे का क्या अर्थ? एक तरफ के लोग कहते हैं लोटा महान है, दूसरी तरफ के लोग कहते हैं पानी महान है। फिर कइयों ने कहा कि इस स्थल पर मंदिर बनाया चाहिए और उसका नाम लोटेश्वर महादेव रखा चाहिए। दूसरी तरफ के लोगों ने कहा: ना, लोटा महान - श्रेष्ठ वज्र 8 पर



डॉ. कु. गंगाधर

हमारे आपस के व्यवहार को लोग सिमर सकें

अपनी कमी को महसूस करना और उसको निकालने के लिए प्रयत्न करना, यह है अपना भला करना। दूसरे किसका भी कमी को नोट करना, उसी अनुसार उनसे व्यवहार करना, इसमें हमारी भलाई नहीं है। जो जैसा है, संबंध-संपर्क तो सेवा में होता ही है। आज कहाँ, कल कहाँ, जहाँ भी जायेंगे परीक्षा तो कहाँ भी आयेगी, जैसे मैं कहीं वैसा सब करे यह नहीं हो सकता है। पर मैं जहाँ भी हूँ, बाबा जैसे चलाये वैसे चले, सफलता तो उसमें होगी ना। मुख्य बात है अपने आपसे उग्री नहीं करना। जैसे बाबा चाहता है ऐसे चलते नहीं हैं, जैसे हम औरों को बताते हैं ऐसे खुद नहीं करते हैं।

बाबा कहते थे कथनी पीछे, करनी पहले रखना। बाबा सभी भिन्न-भिन्न प्रकार के बच्चों को अपना बना करके हरेक बच्चे को एक समान प्यार देता है। यह तो साक्षी होकर देखेंगे तो पता चलता है कि बाबा ने किसी को संशय नहीं दिया है। तो अपने आप को ठीक करने के लिए अलबेले नहीं रहे, अपने ऊपर तरस खाओ और सुस्ती को एकदम भगाओ। मैं बाबा से सदा ही गुडनाइट ऐसे करती हूँ, जो जिनको कोई भी बात दूसरे दिन तो क्या, स्वप्न में या संकल्प में या वाणी में भी बात याद न आवे, फिनिश। ड्रामा की सीन पूरी हो गई। वो सीन चली गई फिर भी मैं अंदर से उस सीन को सामने ले आ रही हूँ, तो बाबा हमारे सामने आयेगा नहीं, तो यह सजा है। बाबा के रूम में जायेंगे, बैठेंगे लेकिन आँसू बहा रहे हैं, ऐसे बाबा के कमरे में बैठे हैं, तो बाबा से मिलन तो मनाओ ना। बाबा दृष्टि दे रहा है, प्यार कर रहा है, वो प्यार तो लो ना। परंतु बाबा से प्यार लेने के बजाए अंदर जो रोना-धोना है, वो यहाँ करते रहेंगे तो और ही वायुमंडल को खराब कर रहे हैं। काम-चलाऊ कुछ भी बात करेंगे तो बाबा भी ऐसे ही हमारे से संबंध में आयेगा। जब जरूरत है तो बाबा मदद करे, बाकी क्या करती हूँ! तो सच्ची दिल से साहब को अपना बनाके रखना, उसमें धर्मरंज भी कुछ नहीं कर सकता। कई ऐसी बातें हैं जो कारण कुछ और होना, बाबा के सामने नहीं आयेगी या यहाँ नहीं आयेगी तो नुकसान किसको होगा? इससे अपने को ही नुकसान होता है, तो अपना मित्र आप बनाओ और बाबा को सदा अपना मित्र बनाके रखना। भले हमारा शिक्षक है, पर सखा रूप से मेरा कान पकड़ सकता है, संशय कह सकता है तुम यह नहीं कर सकती हो। वो मुझे यूज करे और मैं उसको यूज करूँ। अगर मैं उसको यूज नहीं करूँगी तो यूजलेस हो जाऊँगी ना। इतना तो करे जो बाबा के यूजफुल होकर रहे। बाबा भले समय पर मेरे को यूज तो करे। बाबा याद दिलाता है तुम कौन हो, अगर हमसे कोई बड़ी भूल होती है, हम किससे

पेट भरते हैं या पास्ट अपने संस्कारों अनुसार चलते हैं, किसी के साथ अच्छी भावना है और किसी के साथ नहीं है, यह जो भेद वाला भाव है, भाव में भेद है, जो जिस घड़ी हमारे अंदर है, तो वो मतभेद जो है, वो श्रमंत पर चलने नहीं देता है। श्रमंत कुछ और कहती है और मतभेद कुछ और करता है। मानो न मानो परंतु यह डीप बातें माननी पड़ेंगी। बाबा जो सुना रहे हैं वो बात कान खोलके सुनो। इतना बाबा सामने को प्यार भरी दृष्टि दे रहा है। बाबा कहते, तुम्हारे इस जीवन की पूजा (सेवा) होने वाली है, उसके पहले सबको इतना तो प्यार, सच्चाई और शक्ति मिले जो उनके दिल से निकले कि यह तो मेरे लिए पूज्य है। हमारा आपस में व्यवहार ऐसा हो जो सिमरणी में आने के लायक बन जाऊँ। वो होगा ज्ञान के सिमरण करने से, व्यर्थ चिंतन को नाट एलाउड करने से। हमारे संकल्प को क्वालिटी ऐसी हो जो हर संकल्प अंदर से शांत, शुद्ध, श्रेष्ठ और दृढ़ हो तो बाबा शक्ति भर दे, जिससे मेरे को परसलत सुख मिले। तो शांत रहने में बहुत मजा है। और मुझे खुशी है मैं आप लोगों से दिल से बोलती हूँ, आप दिल में लेते हो तो कितनी अच्छी बात है।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका



दादी हृदयमोहिनी अति मुख्य प्रशासिका

मन उसमें एकाग्रचित होना चाहिए, वो होता है या नहीं, होता है तो कितना समय होता है? ये चेक करने की बात है क्योंकि एकाग्रता हमारे योग को विशेषता है। जब और जहाँ हम अपने मन को लाने चाहें, जितना समय हम मन को जिस स्ट्रेज में ठहराने चाहें उसमें ठहरा सकें जिसको हम कहते हैं कन्ट्रोलिंग पावर, रूनिंग पावर। जिस समय जो लक्ष्य लेके बैठो तो जैसा वक्त वैसा काम होना चाहिए अर्थात् पढ़ने के समय पढ़ाई हो, खेलने के समय खेल खेले। तो यह भी हमें चेक करना है कि योग माना मन एकाग्र हो और हमारा मन जितना एकाग्र रहता है उसमें विशेष प्राप्ति होता है।

तो योग माना हमारे मन की एकाग्रता। अगर मन में प्राप्ति नहीं होती है, मानो फरिश्ते रूप में जो हल्केपन का अनुभव होना चाहिए, मन के संकल्प का भी और शरीर भान का भी हल्केपन, अगर वो नहीं होता है तो क्या हम कहेंगे कि हम फरिश्ते के अनुभव में रहे? इसलिए योग में यह चेक करना है कि जो संकल्प में लक्ष्य लेके बैठे वो हमारा पूरा टाइम चला या योग के साथ बीच-बीच में युद्ध भी चली? अगर चली तो उसको योग

आत्मभिमानि बनने से ही बाबा की याद ठहरेगी

में एड नहीं करेंगे। जैसे 15 मिनट योग हुआ और 15 मिनट युद्ध हुई, तो ऐसे ही गिनती की जाएगी। तो आत्म-अभिमानि बनके बाबा को याद करना बहुत इज्जी है, जिसे आत्म-अभिमानि बनके बाबा को याद करने की आदत नहीं होगी, उसको बाबा की याद ज़्यादा समय नहीं ठहरेगी क्योंकि आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से है। तो बाबा जिस विधि से योग करने को कहते हैं, उस विधि से हमारा योग हो तो योग की शक्ति जमा हो सकेगी और अगर योग की शक्ति थोड़ी-थोड़ी कम है तो खजानों से भरपूरता को खुशी व शक्ति फील नहीं होगी। युद्ध चलती रहेगी, मनन चलता रहेगा, वो सब होता रहेगा लेकिन यथार्थ न होने कारण वर्तमान संतुष्टि नहीं होगी और भविष्य प्रालम्ब्य भी जमा नहीं होगी। इसी रीति गुणों के लिए भी बाबा कहते हैं-हमारी चलन से, हमारे संबंध-संपर्क से किसको भी गुणों की फीलिंग आये। जैसे ये बहुत शांत रहते हैं, बातों में नहीं आते हैं, यह रमणीक रहते हैं, यह थोड़ा गंभीर रहते हैं, यह सब पता तो पड़ता है। तो इसी रीति से भी हम देखें एक तो हमारा जो भी कर्म होता है वो हर गुणों से सम्पन्न होता है? चलते-फिरते मुझे अन्तर्मुखता के गुण की फीलिंग आती है? कोई काम नहीं है, उस समय मैं एकदम बिल्कुल अन्तर्मुखी हो जाऊँ तो यह अभ्यास है? हमारे गुण-स्वरूप से दूसरों को गुणों को धारण करने की प्रेरणा आती है, उमंग-उत्साह आता है, तो यह हो गया गुण दान। तो मैं अपने संपर्क द्वारा गुण दान कर

रहा हूँ/कर रही हूँ? ये चेक करो। तो ज्ञान, गुण, शक्तियाँ और समत... यह चारों ही खजाने जो हैं, उससे अगर हम भरपूर रहें तो सम्पन्नता की स्ट्रेज के अनुभवी हो गये। अगर इन चारों में से कोई भी एकाध खजाना कम है या नहीं है तो हम सम्पन्नता के स्ट्रेज का अनुभव नहीं कर सकेंगे। कभी-कभी करेंगे तो नैचुरल नहीं होगा। ऐसे ही बाबा कहते हैं इन खजानों को जमा करने का साधन क्या है? हम अपने पुरुषार्थ से खजाने जमा करते हैं। दूसरा है-हम जो एक दो के स्वामन देते हैं, स्वामन में रहते हैं तो उस निःस्वार्थ सेवा द्वारा हम पुण्य का खाता जमा करते हैं। और एक दो के साथ सेवा में निःस्वार्थ रहते हैं, बेहद में रहते हैं तो हमें दुआयें मिलती हैं। तो एक है अपने पुरुषार्थ से, दूसरी है दुआयें, तीसरा है पुण्य। यह तीन प्रकार से हम अपने खजानों को जमा कर सकते हैं। तो यह चेक करो। इसकी चाबी है निर्माण और निमित्त भव। तो सम्पन्नता को हम इन बातों से चेक करें। निमित्त भाव में मैं-पन और मेरापन खत्म हो जाता है क्योंकि करामतवार बाबा है, मैं तो ट्रस्टी हूँ। सिर्फ घर-गृहस्थी वाले ही ट्रस्टी नहीं हैं, मालिक तो हमारा बाबा है, हम निमित्त हैं। तो निमित्त भाव में निर्माणता भी आती है। उनको वाणी भी निर्मल होती है। तो एक निमित्त भाव में यह तीनों प्राप्ति होती हैं। तो निमित्त भाव खजाने जमा करने की चाबी है। तो खजानों को जमा करके सम्पन्नता को धारण करना है, उसके लिए यह अटेन्शन हमको रचना है।